बादर बरसन लागे डगरिया

-संध्या शर्मा

गरमी की तपन के बाद आकाश में श्वेत-श्याम बादलों के समूह छाने लगते हैं तथा हरियाली, खुशहाली का संदेश देते हैं। यह दस्तक होती है जन-जन में प्राणों का संचार करने वाली वर्षा ऋतु की। आकाश में छायी श्यामल घटाओं तथा ठंडी-ठंडी बयार के साथ झूमती आती है जन-मन को आनंद प्रदान करने वाली, जीवन दायिनी वर्षा की प्रथम फुहार। ग्रीष्म की उष्णता आकाश से जल बिंदुओं के रूप में पुनः धरती पर अवतरित होती है, अपने नवीन मनमोहक रूप में।

ऋतु परिवर्तन के साथ प्रकृति सदैव एक नया ही रूप धारण करती है। चारों ओर छाई हरियाली, सूखी टहनियों पर कोमल नवीन पल्लव देख ऐसा प्रतीत होता है जैसे धरा ने अपने जीर्ण-शीर्ण वस्त्रों का परित्याग कर नवीन हरित परिधान धारण किया हो। आकाश में मेघों की गड़गड़ाहट के साथ श्यामल घनघोर घटाओं में स्वर्णिम चपला द्रुत दामिनी की थिरकन, मृदंग वादन की संगति में नृत्य का आभास देती है। मेघ गर्जना से उन्मादित हो मयूर अपने सतरंगी इंद्रधनुषीय पंखों को फैलाकर नृत्य करने लगता है। श्यामवर्णी मेघ के मध्य उड़ती हुई श्वेत बकुल पंक्तियां अत्यंत मनोहारी प्रतीत होती है। ऐसा लगता है ग्रीष्म ऋतु में कठिन परिश्रम के कारण सूर्यदेव भी श्यामल मेघों की ओट में आंखें मूंदे विश्राम कर रहे हैं।

इस रसमयी ऋतु ने कलाकार हृदय को अत्याधिक रस विभोर किया है। साहित्य, संगीत एवं चित्रकला तीनों ही कलाओं की भावव्यंजना एक ही है किंतु अभिव्यक्ति के माध्यम भिन्न-भिन्न हैं। जहां साहित्य शब्द प्रधान है, तो संगीत स्वर प्रधान है तथा चित्रकला रेखा एवं रंग प्रधान।

लोकगीत भी मेघों और मेघगर्जना के रस माधुर्य से अछूते नहीं है। सावन-भादों के घने कजरारे बादल आकाश पर छाते हैं, तो बनते हैं लोकगीत 'सहज भावनाओं की सहज अभिव्यक्ति'। वे हृदय की गहराइयों से निकलते हैं, इसलिए मर्मस्पर्शी होते हैं। लोकगीतों में जो रस है, भाव है, अनुभूति है, सरलता है, तन्मयता है, भावुकता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है।

प्रस्तुत लोक गीत में नारी-हृदय की मार्मिक अभिव्यक्ति है - एक मां बादलों से निवेदन करते हुए कह रही है - बादल तुम अभी न बरसो, अभी मेरे साजन घर में नहीं हैं। बादल बरसे तो मेरे घर टपकने लगेगा, घर टपकने से मेरे ललन का पालना भीग जाएगा और वो रुदन करने लगेगा।

अबैं जिन बरसो बादरा रे
बरसन लागे बादरा रे,
चुंअन मोरे लागे बांगला रे। अबैं...
चुंअन मोरे लागे बांगला रे,
भींजन मोरे लागे पालना रे। अबैं...